झारखंड में व्यवासियक शिक्षा का एक व्यापक अध्ययन, उनके भौगोलिक वितरण, जनसंख्या संरचना और शैक्षिक प्राप्ति के संबंध में

Namita Kumari[1], Dr. Lallit Mohan Choudhary[2]

[1] Research Scholar, SSSUTMS, Sehore, Madhya Pradesh, India
[2]Assistant Professor, SSSUTMS, Sehore, Madhya Pradesh, India

प्रस्तावना

यह समाजशास्त्रीय अध्ययन, झारखंड राज्य के पलामू जिले में व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रमों में प्रवेश के गतिशीलता और पारंपरिक लिंग भूमिकाओं और रूढ़ियों के विघटन पर उनके प्रभाव की पड़ताल करता है। ऐतिहासिक रूप से, लिंग ने शैक्षिक अवसरों और परिणामों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, विशेष रूप से व्यावसायिक क्षेत्रों में। यह शोध पलामू जिले में व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से स्थापित लिंग मानदंडों को चुनौती देने और लिंग समानता को बढ़ावा देने के तरीकों को समझने का प्रयास करता है।

यह अध्ययन एक मिश्रित-विधि दृष्टिकोण का उपयोग करता है, जिसमें गुणात्मक साक्षात्कार, सर्वेक्षण और डेटा विश्लेषण शामिल है ताकि छात्रों, शिक्षकों और व्यावसायिक शिक्षा से जुड़े हितधारकों के अनुभवों और दृष्टिकोणों का पता लगाया जा सके। व्यक्तियों के व्यावसायिक शिक्षा का पीछा करने के निर्णय को प्रभावित करने वाले कारकों और इन कार्यक्रमों के भीतर उनके अनुभवों की जांच करके, शोध का उद्देश्य किसी भी लिंग-संबंधी असमानताओं को खोजने का है जो पहुंच, भागीदारी और परिणामों में हैं। इसके अलावा, यह अध्ययन पलामू जिले में व्यावसायिक शिक्षा की भूमिका का आकलन करता है कि वे पारंपरिक लिंग भूमिकाओं और अपेक्षाओं को कैसे बदल रहे हैं। यह जांचता है कि क्या व्यावसायिक प्रशिक्षण सभी लिंगों के व्यक्तियों के बीच अधिक आर्थिक स्वतंत्रता और सशक्तिकरण को बढ़ावा देता है और लिंग के आधार पर करियर विकल्पों को सीमित करने वाले प्रचलित रूढ़ियों को चुनौती देता है।

इस शोध के निष्कर्ष पलामू जिले और उससे आगे के नीति और शैक्षिक पहलों को सूचित करने की क्षमता रखते हैं, जो समावेशी और लिंग-तटस्थ व्यावसायिक शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए रणनीतियों के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। पलामू जिले में व्यावसायिक शिक्षा की रूपांतरणकारी शक्ति को पहचानते हुए, हम भारत में लिंग समानता और शिक्षा पर व्यापक बहस में योगदान देना चाहते हैं। अंततः, यह अध्ययन लिंग सीमाओं से परे एक अधिक समान और समावेशी शैक्षिक परिदृश्य की दिशा में प्रकाश को उजागर करने का प्रयास करता है।

Keyword, *शिक्षा , जनजाति समुदाय , सामाजिक-आर्थिक कारक, सांस्कृतिक संरक्षण , विपद्ग्रस्त समूह*

1.परिचय:

झारखंड, जो भारत के पूर्वी क्षेत्र में बसा एक राज्य है, एक ऐसा क्षेत्र है जो संस्कृति, परंपरा और विविधता के एक समृद्ध ताने-बाने से गूँजता है। जबकि अक्सर अधिक जनसंख्या वाले और आर्थिक रूप से प्रमुख

राज्यों के कथाओं से ओझल हो जाता है, झारखंड एक अद्वितीय समाजशास्त्रीय परिदृश्य का दावा करता है जो व्यापक अन्वेषण के योग्य है। यह समाजशास्त्रीय अध्ययन अपने लोगों के जीवन को आकार देने वाले बहुआयामी आयामों को उजागर करने, इसकी पहचान के गठन और विकास को प्रभावित करने वाले चुनौतियों और अवसरों पर एक यात्रा पर निकलता है।

झारखंड और उसकी समाजशास्त्रीय बारीकियों को समझने के लिए, हमें इसके ऐतिहासिक संदर्भ में उतरना होगा। वर्ष 2000 में एक अलग राज्य के रूप में झारखंड का उदय स्वायत्तता और मान्यता के लिए दशकों के संघर्ष का परिणाम था। इसकी जड़ें आदिवासी (स्वदेशी) आंदोलनों में देखी जा सकती हैं, जो आदिवासी समुदायों द्वारा आत्मनिर्णय और अपनी सांस्कृतिक विरासत की रक्षा के लिए किए गए थे। ये आंदोलनों, जो राज्य के इतिहास से गहराई से जुड़े हुए हैं, झारखंड की अनूठी पहचान की नींव हैं।

झारखंड विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं और परंपराओं का घर है। यह विभिन्न आदिवासी और गैर-आदिवासी समुदायों द्वारा बसाया गया है, प्रत्येक क्षेत्र की जीवंत सांस्कृतिक परिदृश्य में योगदान देता है। यह विविधता न केवल गर्व का स्रोत है, बल्कि एक सामाजिक-सांस्कृतिक चुनौती भी है क्योंकि इसमें सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करते हुए सामाजिक एकजुटता और एकीकरण को बढ़ावा देने का नाजुक संतुलन शामिल है।

पलामू जिला, जो झारखंड राज्य के पूर्वी भाग में स्थित है, समकालीन भारत के शैक्षिक परिदृश्य को परिभाषित करने वाले चुनौतियों और अवसरों का उदाहरण है। झारखंड खुद एक राज्य है जो अपनी समृद्ध आदिवासी विरासत, विशाल प्राकृतिक संसाधनों और सामाजिक और आर्थिक असमानताओं के इतिहास से चिह्नित है। इस संदर्भ में, पलामू जिला उन व्यापक चुनौतियों का सूक्ष्म परिचय प्रस्तुत करता है, जिनका सामना उन क्षेत्रों द्वारा किया जाता है जो शैक्षिक पहुंच और लिंग असमानता से जूझ रहे हैं।

ऐतिहासिक रूप से, लिंग भारत भर में शैक्षिक प्रक्षेपवक्र का एक निर्णायक कारक रहा है। गहराई से जड़ें जमा चुकी सामाजिक मानदंडों ने अक्सर व्यक्तियों को पारंपरिक भूमिकाओं में प्रशिक्षित किया है, जहां लड़कों को इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में करियर बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था, जबकि लड़कियों को पोषण भूमिकाओं और पारंपरिक घरेलू कर्तव्यों पर ध्यान केंद्रित करने की उम्मीद थी। हालाँकि, परिवर्तन की हवा लगातार बह रही है, एक नए युग में प्रवेश कर रही है जहाँ व्यावसायिक शिक्षा को आर्थिक आत्मनिर्भरता का मार्ग बताया गया है।

2. पलामू जिले

पलामू जिले में, व्यावसायिक शिक्षा का उदय एक महत्वपूर्ण विकास है जो लिंग असमानताओं को कम करने और सभी के लिए समान अवसर प्रदान करने की क्षमता रखता है। यह अध्ययन पलामू जिले में व्यावसायिक शिक्षा की स्थिति का आकलन करता है, और यह पता लगाता है कि कैसे यह लिंग समानता को बढ़ावा दे सकता है। यह अध्ययन यह भी देखता है कि कैसे व्यावसायिक शिक्षा को और अधिक

समावेशी और न्यायसंगत बनाया जा सकता है ताकि यह सभी के लिए एक वास्तविक अवसर प्रदान कर सके।

यह अध्ययन पलामू जिले में व्यावसायिक शिक्षा के बारे में व्यापक जानकारी प्रदान करता है, और यह एक महत्वपूर्ण योगदान है जो इस क्षेत्र में आगे के शोध को मार्गदर्शन कर सकता है। यह उन लोगों के लिए भी एक उपयोगी संसाधन है जो व्यावसायिक शिक्षा के बारे में अधिक जानना चाहते हैं और यह कैसे लिंग समानता को बढ़ावा दे सकता है।

3. सामाजिक असमानता और विकास

जबकि झारखंड की प्राकृतिक संपदा, खनिजों और वनों के रूप में, अपार आर्थिक potential है, यह भी जटिल चुनौतियां पेश करता है। राज्य भूमि अधिग्रहण, विस्थापन और पर्यावरणीय क्षरण जैसे मुद्दों से जूझता है क्योंकि यह इन संसाधनों को विकास के लिए भुनाने की कोशिश करता है। यह, बदले में, महत्वपूर्ण समाजशास्त्रीय निहितार्थ हैं, जहां वंचित समुदाय अक्सर इन परिवर्तनों का खामियाजा भुगतते हैं।

शहरीकरण एक ऐसी घटना है जो झारखंड के सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य को तेजी से बदल रही है। रांची और जमशेदपुर जैसे शहरों में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है, जिससे जीवनशैली, उपभोग पैटर्न और सामाजिक पदानुक्रम में बदलाव आया है। अध्ययन इस शहरी परिवर्तन के गतिशीलता और इसकी पारंपरिक ग्रामीण समाजों पर प्रभाव की पड़ताल करता है।

4.शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक सेवाएं

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच सामाजिक विकास का एक महत्वपूर्ण पहलू है। अध्ययन झारखंड द्वारा इन सेवाओं तक समान पहुंच प्रदान करने के लिए सामना की जाने वाली चुनौतियों में उतरता है, विशेषकर इसके ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में। यह शिक्षा की भूमिका को आकांक्षाओं और सामाजिक गतिशीलता को आकार देने में भी देखता है।

झारखंड का राजनीतिक परिदृश्य सत्ता के गतिशीलता और क्षेत्रीय पहचानों के एक जटिल द्वंद्व से चिह्नित किया गया है। राज्य ने सरकार में लगातार बदलाव और राजनीतिक गठबंधन देखे हैं, जिनके नीतियों के निर्माण और कार्यान्वयन पर प्रभाव पड़ता है। इन गतिशीलताओं को समझना विकास पहलों के लिए सामाजिक-राजनीतिक संदर्भ को समझने के लिए महत्वपूर्ण है।

शिक्षा को लंबे समय से सामाजिक परिवर्तन और सशक्तिकरण के लिए एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में मान्यता दी गई है। भारत के संदर्भ में, जहां विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक और आर्थिक कारक शैक्षिक पहुंच और परिणामों को प्रभावित करते हैं, शिक्षा की भूमिका लिंग गतिशीलता को फिर से आकार देने में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। यह समाजशास्त्रीय अध्ययन झारखंड राज्य के पलामू जिले में विशेष

रूप से ध्यान केंद्रित करते हुए, व्यावसायिक शिक्षा में प्रवेश और धीरे-धीरे लिंग असमानताओं के उन्मूलन के बीच के जटिल संबंध को तलाशने के लिए एक यात्रा पर निकलता है।

लिंग ऐतिहासिक रूप से शैक्षिक विकल्पों और परिणामों में एक व्यापक निर्धारक रहा है, जो अक्सर पारंपरिक भूमिकाओं और stereotypes को मजबूत करता है। हालांकि, वर्षों से, शिक्षा के परिदृश्य में विकास हुआ है, जिसमें व्यावसायिक शिक्षा कौशल विकास और आर्थिक सशक्तिकरण के लिए एक आशाजनक मार्ग के रूप में उभर रही है। पलामू जिले में, यह विकास एक अद्वितीय चरित्र धारण करता है, जहां ग्रामीण और शहरी गतिशीलता, सामाजिक-आर्थिक स्थितियों और सांस्कृतिक कारकों के जटिल द्वंद्व से व्यक्तियों की व्यावसायिक शिक्षा तक पहुंच और इन कार्यक्रमों के भीतर उनके अनुभवों को आकार मिलता है। यह अध्ययन यह पता लगाने का प्रयास करता है कि कैसे व्यावसायिक शिक्षा लिंग असमानताओं को कम कर सकती है और सभी के लिए समान अवसर प्रदान कर सकती है। यह उन कारकों की पड़ताल करता है जो लिंग असमानताओं को जन्म देते हैं, जैसे कि सामाजिक और सांस्कृतिक मानदंड, आर्थिक बाधाएं, और अवसरों की कमी। यह यह भी देखता है कि कैसे व्यावसायिक शिक्षा इन कारकों को दूर कर सकती है और सभी के लिए एक अधिक समावेशी और न्यायसंगत शिक्षा प्रणाली का निर्माण कर सकती है। यह अध्ययन पलामू जिले में व्यावसायिक शिक्षा के बारे में व्यापक जानकारी प्रदान करता है, और यह एक महत्वपूर्ण योगदान है जो इस क्षेत्र में आगे के शोध को मार्गदर्शन कर सकता है। यह उन लोगों के लिए भी एक उपयोगी संसाधन है जो व्यावसायिक शिक्षा के बारे में अधिक जानना चाहते हैं और यह कैसे लिंग समानता को बढ़ावा दे सकता है।

5. साहित्य समीक्षा

बैराथी, एस. (1992). इस लेख में भारत में जनजातियों के बीच शिक्षा की स्थिति का अवलोकन प्रस्तुत किया गया है। इसमें उन ऐतिहासिक कारकों की चर्चा की गई है जिनसे जनजातियों के बीच शिक्षा के स्तर को कम किया गया है, साथ ही उन चुनौतियों का भी विवेचन किया गया है जिनका सामना करना उन्हें शिक्षा की पहुंच और पूरा करने में करना पड़ता है। इस लेख में जनजातियों की शिक्षा को सुधारने में हासिल की गई कुछ सफलताओं का भी उल्लेख किया गया है, और आगे की प्रगति के लिए सुझाव दिये गए हैं।

रॉय बर्मन, बी.के. (1996). इस लेख में जनजातियों को अपनी भाषाओं में शिक्षा प्राप्त करने में आने वाली समस्याओं का अध्ययन किया गया है। इसमें यह तर्क दिया गया है कि शिक्षा में जनजाति भाषाओं का उपयोग जनजाति संस्कृति और पहचान के संरक्षण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस लेख में यह भी चर्चा की गई है कि जनजातियों के लिए प्रभावी द्विभाषी शिक्षा कार्यक्रम विकसित और प्रायोजित करने की चुनौतियाँ क्या हैं।

चिटनिस, एस. (1981). यह पुस्तक भारत में जनजातियों की शिक्षा का व्यापक अवलोकन प्रदान करती है। इसमें जनजातियों की शिक्षा के ऐतिहासिक विकास की चर्चा की गई है, साथ ही देश के विभिन्न हिस्सों

में जनजातियों की शिक्षा की वर्तमान स्थिति पर भी चर्चा की गई है। पुस्तक में जनजातियों की शिक्षा को सुधारने के लिए आवश्यक चुनौतियों और अवसरों की पहचान भी की गई है, और जनजातियों की शिक्षा को सुधारने के लिए सुझाव दिए गए हैं।

कुमार, ए. (2008). यह लेख भारत के झारखंड राज्य में जनजाति के बच्चों की शिक्षा की स्थिति का अध्ययन करता है। इसमें चर्चा की गई है कि झारखंड में जनजाति के बच्चों की शिक्षा के स्तर को कम करने में कौन कौन से कारक शामिल हैं, साथ ही उन चुनौतियों का भी विवेचन किया गया है जिनका सामना करना उन्हें शिक्षा की पहुंच और पूरा करने में करना पड़ता है। इस लेख में झारखंड में जनजाति के बच्चों की शिक्षा को सुधारने के लिए सुझाव दिए गए हैं।

भारत में जनजातियों की शिक्षा पर कई अन्य अध्ययन भी किए गए हैं। ये अध्ययन जनजाति शिक्षा को घेरने वाली चुनौतियों और अवसरों के बारे में जानकारी का भंडार प्रदान करते हैं, और जनजाति शिक्षा को सुधारने के लिए काम कर रहे किसी भी व्यक्ति के लिए एक मूल्यवान स्रोत हो सकते हैं।

साहू, एस. (2019). झारखंड के विशेष रूप से विपद्ग्रस्त जनजाति समूहों के जनसांख्यिकीय प्रवृत्तियों और पेशेवर संरचना की जाँच करता है। इस अंतरराष्ट्रीय समाजशास्त्र में जनजाति समूहों के विशेष रूप से विपद्ग्रस्त समूहों के जनसांख्यिकीय प्रवृत्तियों और पेशेवर संरचना की जाँच की गई है झारखंड राज्य, भारत में। यह पाया गया है कि विशेष रूप से विपद्ग्रस्त जनजाति समूहों में शिक्षा की अशिक्षता की अधिक दर है, और वे ग्रामीण क्षेत्रों में और कम वेतन वाले पेशेवरों में संघटित हैं। पेपर में यह भी पाया गया है कि विशेष रूप से विपद्ग्रस्त जनजाति समूहों को गरीबी और सामाजिक असमावेशन का अधिक प्रभाव पड़ता है।

सिंघी, एन.के. (1979). यह पुस्तक भारत में शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन के बीच संबंध का अध्ययन करती है। इसमें यह तर्क दिया गया है कि शिक्षा सामाजिक परिवर्तन के लिए एक शक्तिशाली उपकरण हो सकती है, और जैसे कि जनजातियों जैसे अल्पसंख्यक समूहों के जीवन को सुधारने में मदद कर सकती है। पुस्तक में जनजातियों को शिक्षा प्रदान करने की चुनौतियों की चर्चा भी की गई है, और जनजातियों की शिक्षा को सुधारने के लिए सुझाव दिए गए हैं।

इस रिपोर्ट में भारत में अनुसूचित जातियों की स्थिति का व्यापक अवलोकन प्रदान किया गया है। इसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और गरीबी जैसे विषयों का विवरण शामिल है। रिपोर्ट पाया है कि अनुसूचित जातियों की शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार का स्तर सामान्य जनसंख्या से कम है। इसमें भी यह पाया गया है कि अनुसूचित जातियों को गरीबी का अधिक प्रभाव पड़ता है।

विद्यार्थी, एल.पी. (1976). यह पुस्तक भारत में जनजाति संस्कृति का व्यापक अवलोकन प्रदान करती है। इसमें जनजाति समूहों की इतिहास, धर्म, कला और संस्कृति पर चर्चा की गई है। पुस्तक में आधुनिक दुनिया में जनजाति संस्कृतियों को किस प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है इस पर भी चर्चा की गई है।

शाहा, वी. (2011). यह पेपर भारत में जनजाति बच्चों की स्थिति को ऐतिहासिक दृष्टिकोण से जांचता है। इसमें पाया गया है कि जनजाति बच्चे कई सदियों से मार्जिनलाइज हो रहे हैं, और उनकी स्थिति हाल के वर्षों में सार्थक रूप से सुधार नहीं हुई है। पेपर में भी जनजाति बच्चों की स्थिति को सुधारने के लिए सुझाव दिए गए हैं।

भारत में जनजातियों को प्राप्त चुनौतियों और अवसरों का मूल्यवान अवलोकन प्रदान किया गया है। वे जनजातियों के लिए शिक्षा का महत्व हाइलाइट करते हैं, और जनजातियों की शिक्षा को बाधित करने वाले सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक कारकों को समझाने की आवश्यकता को बताते हैं। इन पेपर्स को भारत में जनजातियों की स्थिति को सुधारने में रुचि रखने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण पठनीय माना जा सकता है। ये अध्ययन जनजातियों को प्राप्त चुनौतियों और अवसरों की जानकारी का बहुमूल्य स्रोत प्रदान करते हैं, और जनजातियों की स्थिति को सुधारने में कामआने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए मूल्यवान स्रोत हो सकते हैं।

इस अध्ययन से यह स्पष्ट है कि इन चुनौतियों का समाधान बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है। सबसे पहले, आदिवासी समुदायों में व्यावसायिक शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से लक्षित नीतियों और पहलों की आवश्यकता है, विशेष रूप से महिलाओं पर ध्यान केंद्रित करना। इसमें ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्रों की स्थापना, वित्तीय सहायता प्रदान करना और लिंग पूर्वाग्रहों को चुनौती देने के लिए जागरूकता अभियानों को लागू करना शामिल हो सकता है।

इसके अलावा, सरकारी संगठनों, गैर-सरकारी संगठनों और स्थानीय समुदायों के बीच साझेदारी को बढ़ावा देना व्यावसायिक शिक्षा के लिए अनुकूल वातावरण बनाने के लिए आवश्यक है। समुदाय की भागीदारी और भागीदारी शैक्षिक कार्यक्रमों को आदिवासी व्यक्तियों की विशिष्ट आवश्यकताओं और आकांक्षाओं के अनुरूप बनाने में मदद कर सकती है।

इसके अलावा, शिक्षा को बढ़ावा देते हुए आदिवासी समुदायों की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित और मनाने के प्रयास किए जाने चाहिए। व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में पारंपरिक ज्ञान और कौशल को एकीकृत करना न केवल आदिवासी युवाओं को सशक्त कर सकता है, बल्कि उनकी अनूठी सांस्कृतिक पहचानों के संरक्षण में भी योगदान दे सकता है।

6. निष्कर्ष

झारखंड के पलामू जिले में व्यावसायिक शिक्षा में प्रवेश और लिंग के अंत पर समाजशास्त्रीय अध्ययन, विभिन्न आदिवासी समुदायों के निवास वाले क्षेत्र में शिक्षा और लिंग गतिशीलता से संबंधित महत्वपूर्ण मुद्दों पर प्रकाश डालता है। इस अध्ययन ने आदिवासी आबादी, विशेष रूप से महिलाओं को व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने में आने वाली चुनौतियों और इन चुनौतियों के लिंग असमानताओं से कैसे जुड़ने के बारे में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान की है।

इस अध्ययन के निष्कर्षों से पता चलता है कि पलामू जिले में व्यावसायिक शिक्षा तक पहुंच में सुधार के प्रयास किए गए हैं, लेकिन अभी भी आदिवासी व्यक्तियों, विशेषकर महिलाओं के ऐसे कार्यक्रमों में भाग लेने में महत्वपूर्ण बाधाएं हैं। ये बाधाएं सामाजिक-आर्थिक बाधाएं, सांस्कृतिक मानदंड और दूरदराज के क्षेत्रों में सीमित बुनियादी ढांचा हैं। इसके अलावा, लिंग मानदंडों और असमानताओं का हठपूर्वक पालन महिलाओं के शैक्षिक अवसरों और करियर विकल्पों पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है।

निष्कर्ष में, पलामू जिले और इसी तरह के क्षेत्रों में आदिवासी आबादी के लिए व्यावसायिक शिक्षा में लिंग समानता की राह एक चुनौतीपूर्ण है, लेकिन यह एक यात्रा है जिसकी यात्रा करना है। बाधाओं को दूर करके, समावेश को बढ़ावा देकर और सांस्कृतिक संरक्षण के महत्व को पहचानते हुए, हम झारखंड और उससे आगे के आदिवासी समुदायों के लिए एक अधिक समान और समृद्ध भविष्य की राह बना सकते हैं। यह अध्ययन उस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जो एक अधिक समावेशी और लिंग-समतापूर्ण व्यावसायिक शिक्षा परिदृश्य के लिए अंतर्दृष्टि और सिफारिशें प्रदान करता है।

7. REFERENCES

[1.] Bairathi, S. (1992). Status of education among tribals, 'Tribal culture, economy and health. Rawat publications, New Delhi.

[2.]Roy Burman, B.K.(1996). Problems of tribal language in education-A supplement to the special problems of tribes", vanyajathi, Census report 2011, Registrar General of India.

[3.] Chitnis, S. (1981). A long way to go.....Allied Publishers, New Delhi.

[4.] Kumar, A. (2008). Education of Tribal Children in Jharkhand: A Situational Analysis, Jharkhand Journal of Development and Management Studies, XISS, Ranchi, Vol. 6, No.4 (XXV).

[5.] Sahu, S. (2019). Demographic trends and Occupational Structure of Particularly Vulnerable Tribal Groups of Jharkhand. International Journal of Reviews and Research in Social Sciences, Vol.07, Issue 2. Pp 316-322.

[6.] Singhi. N.K (1979). Education and Social Change. Rawat Publication, Jaipur.

[7.]Statistical Profile of Scheduled Tribes in India, 2013.

[8.] Vidyarthi, L.P. (1976). Tribal Culture of India.Concept Publishing Company Pvt. Ltd, New Delhi

[9.] Xaxa, V. (2011). 'The Status of Tribal Children in India: A historical perspective', Working Paper Series-7, Institute for Human Development (IHD)-UNICEF:.